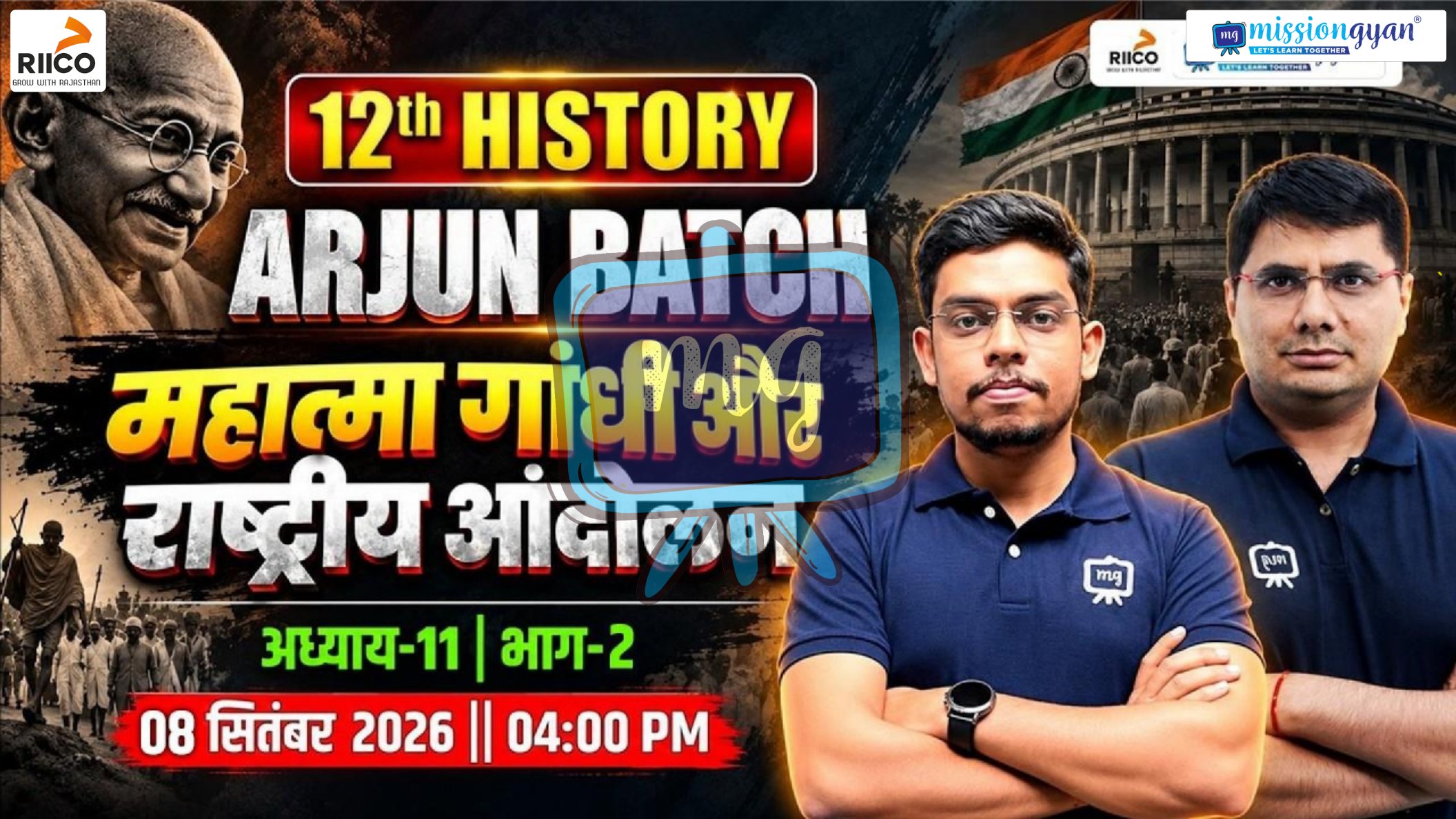
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
12th HISTORY
ARJUN BATCH
महात्मा गांधी और
राष्ट्रीय आंदोलन
अध्याय-11 | भाग-2
08 सितंबर 2026 || 04:00 PM

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

MG + राष्ट्रीय आ०

1757 → पूरे भारत

नायक × अंग्रेज → शोषण।



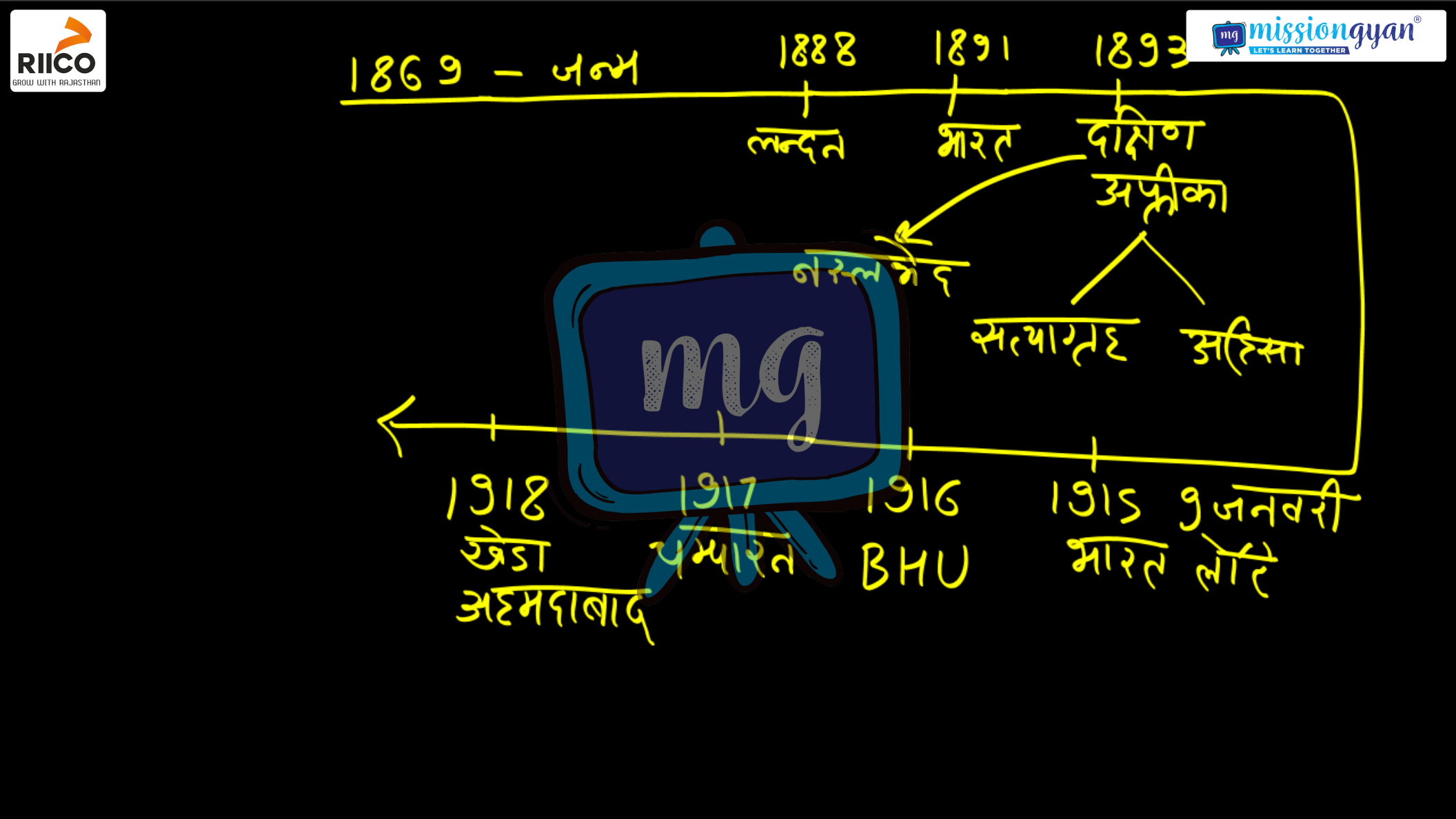
1869 – जन्म
1888
लन्दन
1891
भारत
1893
दक्षिण अफ्रीका
नेटाल
सत्याग्रह
अहिंसा
1914
खेड़ा अहमदाबाद
1917
चम्पारन
1916
BHU
1915
9 जनवरी भारत लौटे

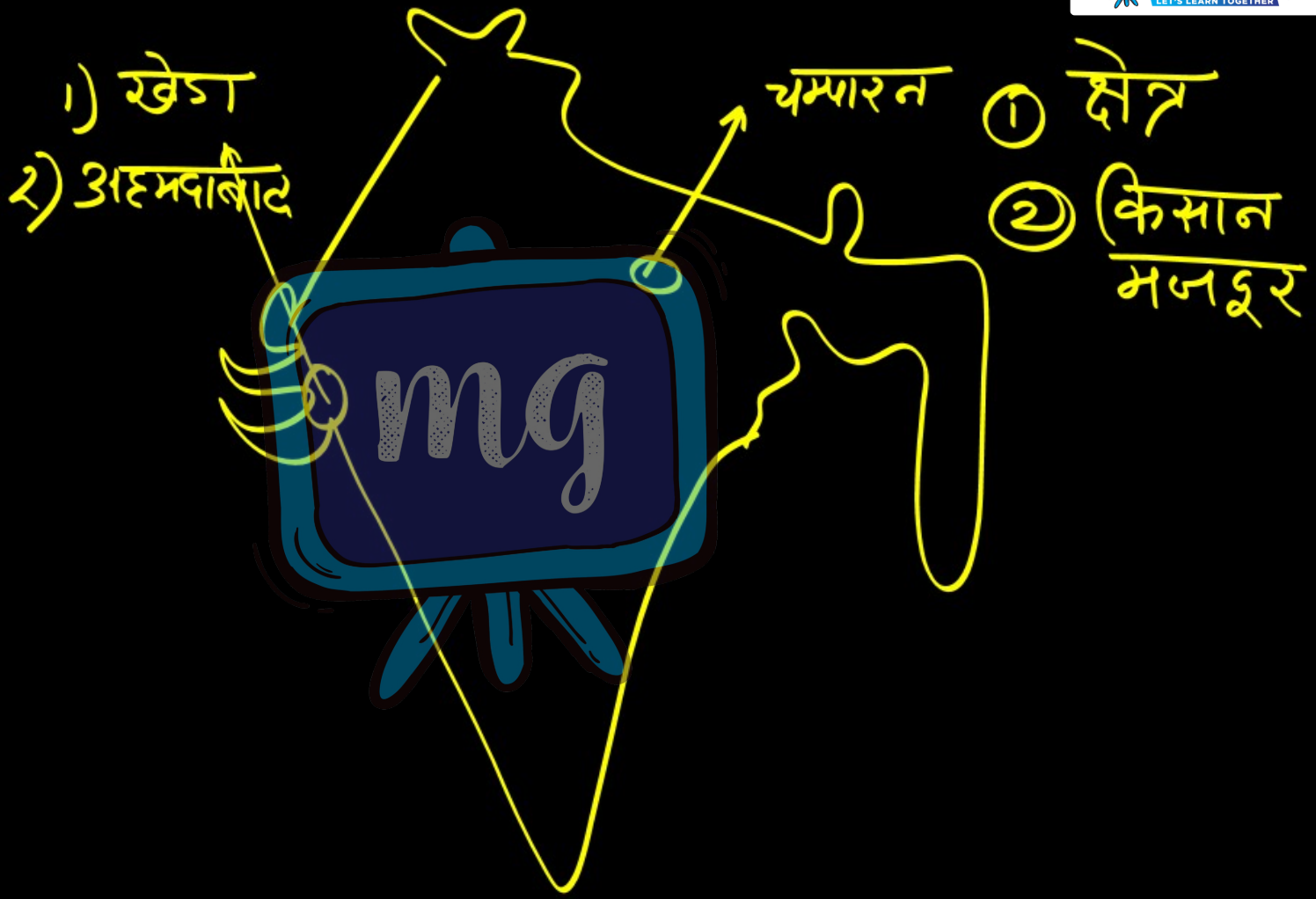
1) खेड़ा
2) अहमदाबाद
चम्पारन
① क्षेत्र
② किसान
मजदूर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

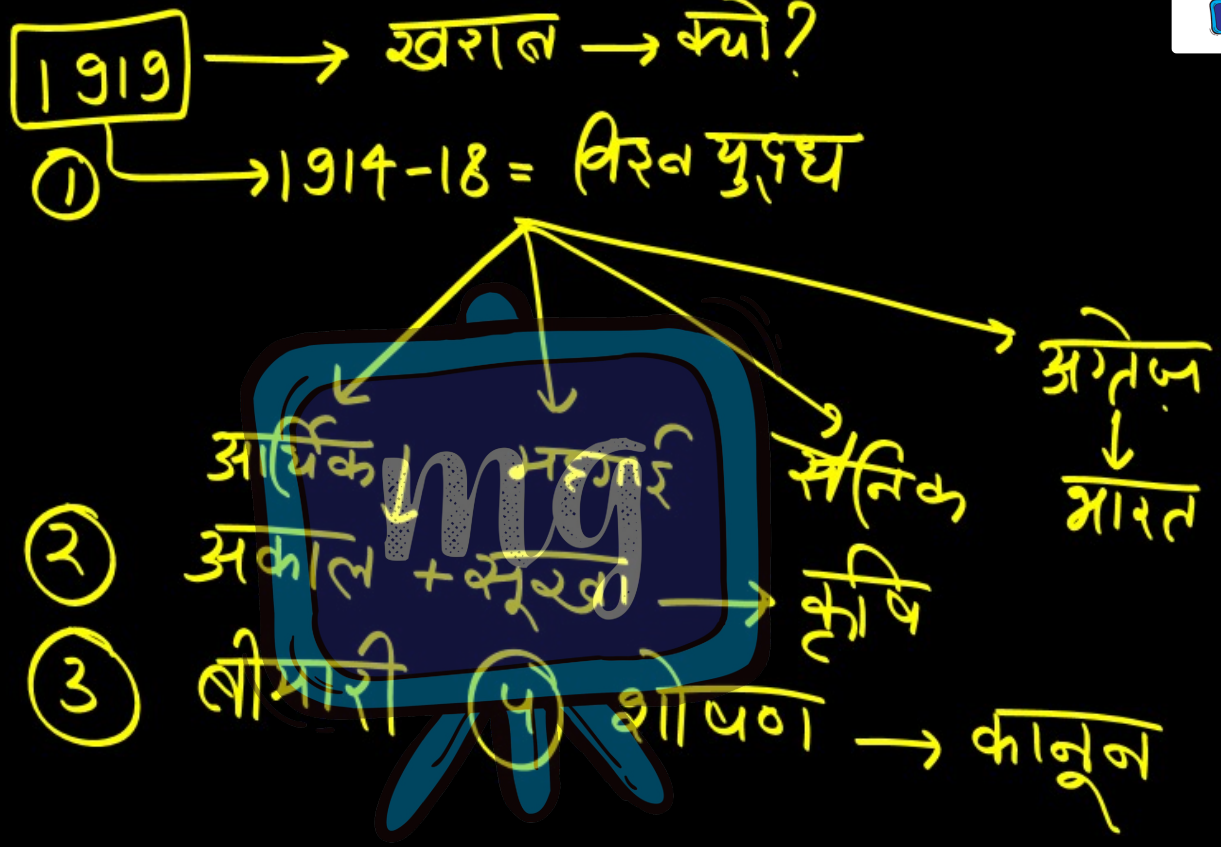

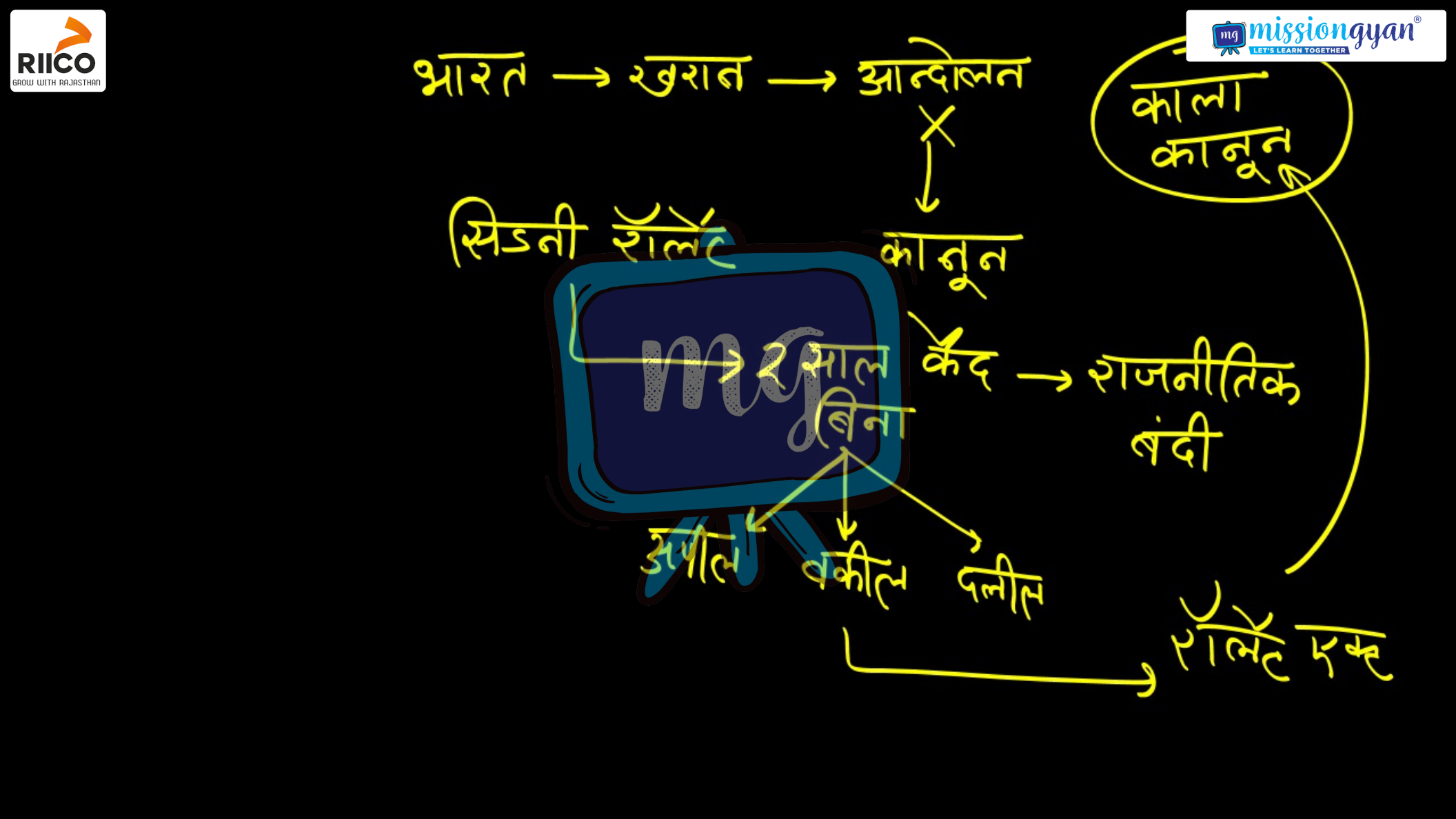
भारत → खराब → आन्दोलन
X
कानून
सिडनी रॉलेट
काला कानून
2 साल बिना
कैद → राजनीतिक बंदी
अपील
वकील
दलील
रॉलेट एक्ट

महात्मा गाँधी ⟶ रॉलेट एक्ट आन्दोलन

Arrest



पंजाब / दिल्ली

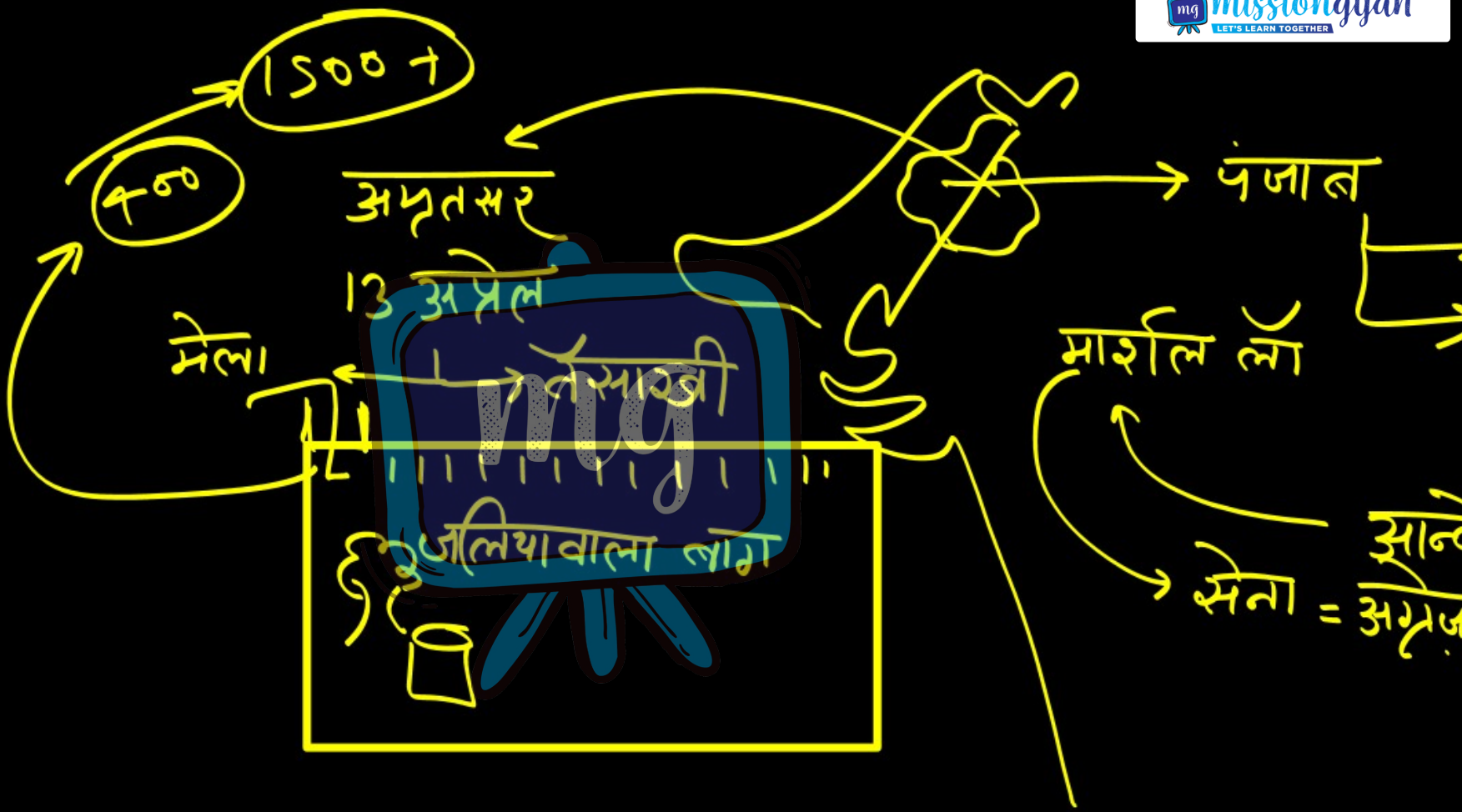
1500 ₹
400
अमृतसर
13 अप्रैल
मेला
रौलेट एक्ट
जलियांवाला बाग
पंजाब
मार्शल लॉ
सेना

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1917 → राजकुमार शुक्ल चम्पारन

नील ×

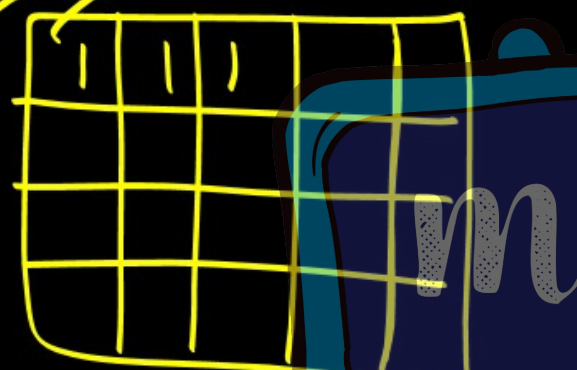

चम्पारन → कारण

तिनकाठिया

जर्मनी

नीले

तेजर

चम्पारत सत्याग्रह

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

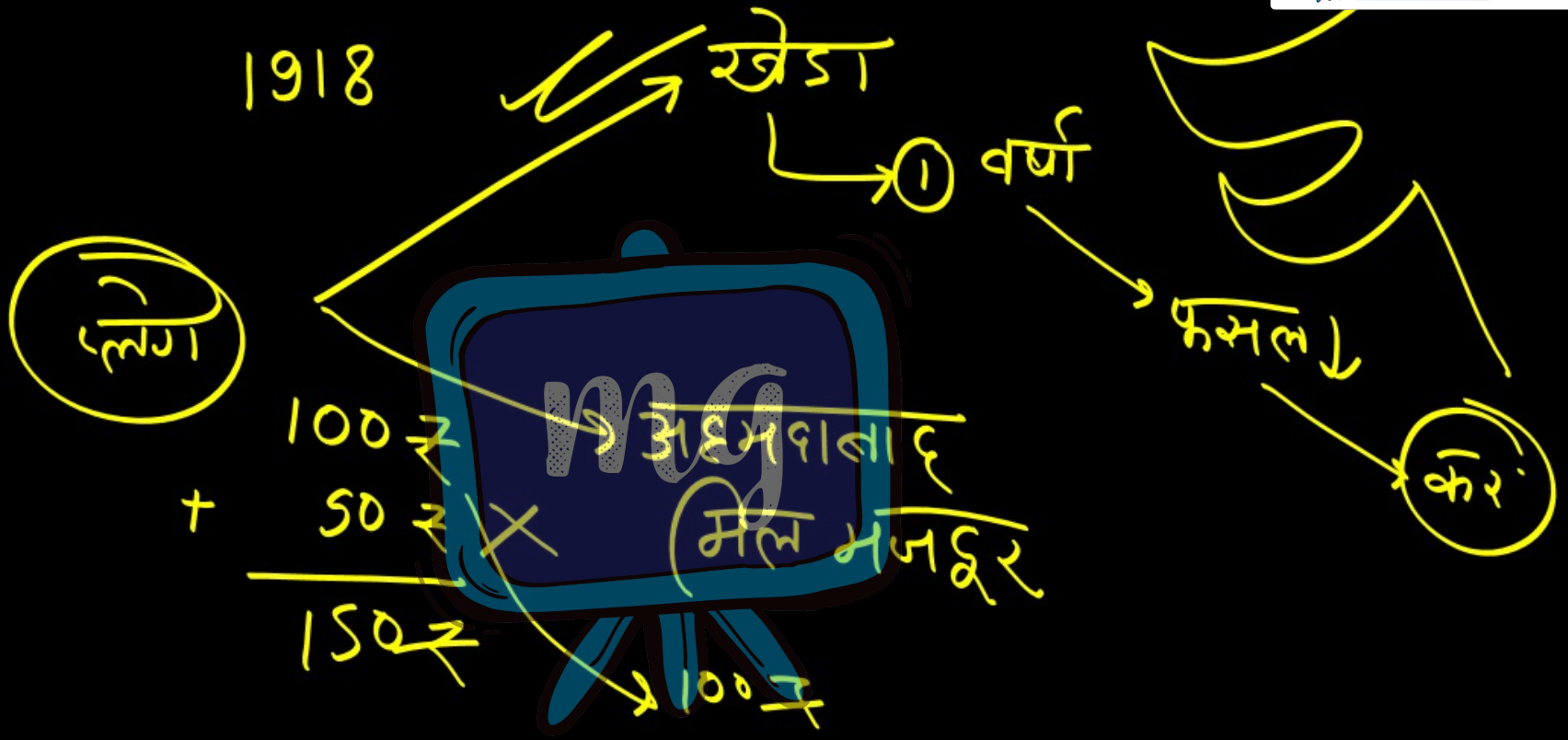


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

रॉलेट एक्ट आन्दोलन – 1919 ई.

- भारतीय प्रेस और अन्य आतंकी घटनाओं पर प्रतिबंध लगाने के लिए सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली एक समिति की संस्तुतियों के आधार पर इन कठोर उपायों को लागू किया गया।
- "बिना वकील, बिना अपील और बिना दलील का कानून"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- गाँधी जी ने देशभर में 'रॉलेट एक्ट' के खिलाफ एक अभियान चलाया और इसे 'काला कानून' कहा।
- पंजाब में विशेष रूप से कड़ा विरोध हुआ।
- पंजाब जाते समय गाँधी जी को कैद कर लिया गया।
- स्थानीय कांग्रेसजनों को गिरफ्तार कर लिया गया था।
  1. डॉ. सैफूद्दीन किचलु
  2. सत्यपाल गौतम
- पंजाब की स्थिति और तनावपूर्ण हो गयी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जलियांवाला बाग हत्याकांड – 13 अप्रैल, 1919

- अमृतसर में अंग्रेज ब्रिगेडियर ने एक राष्ट्रवादी सभा पर गोली चलाने का हुक्म दिया तब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के नाम से जाने गए इस हत्याकाण्ड में चार सौ से अधिक लोग मारे गये।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

रॉलेट सत्याग्रह से ही गाँधी जी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए।

- अब गाँधी जी ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ 'असहयोग' अभियान की माँग कर दी।
- जो भारतीय उपनिवेशवाद का खात्मा करना चाहते थे उनसे आग्रह किया गया कि वे स्कूल, कॉलेज और न्यायालय न जाएँ तथा कर न चुकाएँ।
- गाँधी जी ने कहा कि यदि असहयोग का ठीक ढंग से पालन किया जाये तो भारत एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त कर लेगा।
- अपने संघर्ष का विस्तार करते हुए उन्होंने खिलाफत आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खिलाफत आंदोलन :-

- भारतीय मुस्लिम समुदाय का अंग्रेजों के खिलाफ था।
- कारण – अंग्रेजों द्वारा तुर्की के शासक के साथ अपमानजनक व्यवहार किया जा रहा था।
- उद्देश्य/माँग – तुर्की शासक कमाल आतातुर्क द्वारा समाप्त किए गए सर्व-इस्लामवाद के प्रतीक खलीफा की पुनर्स्थापना।

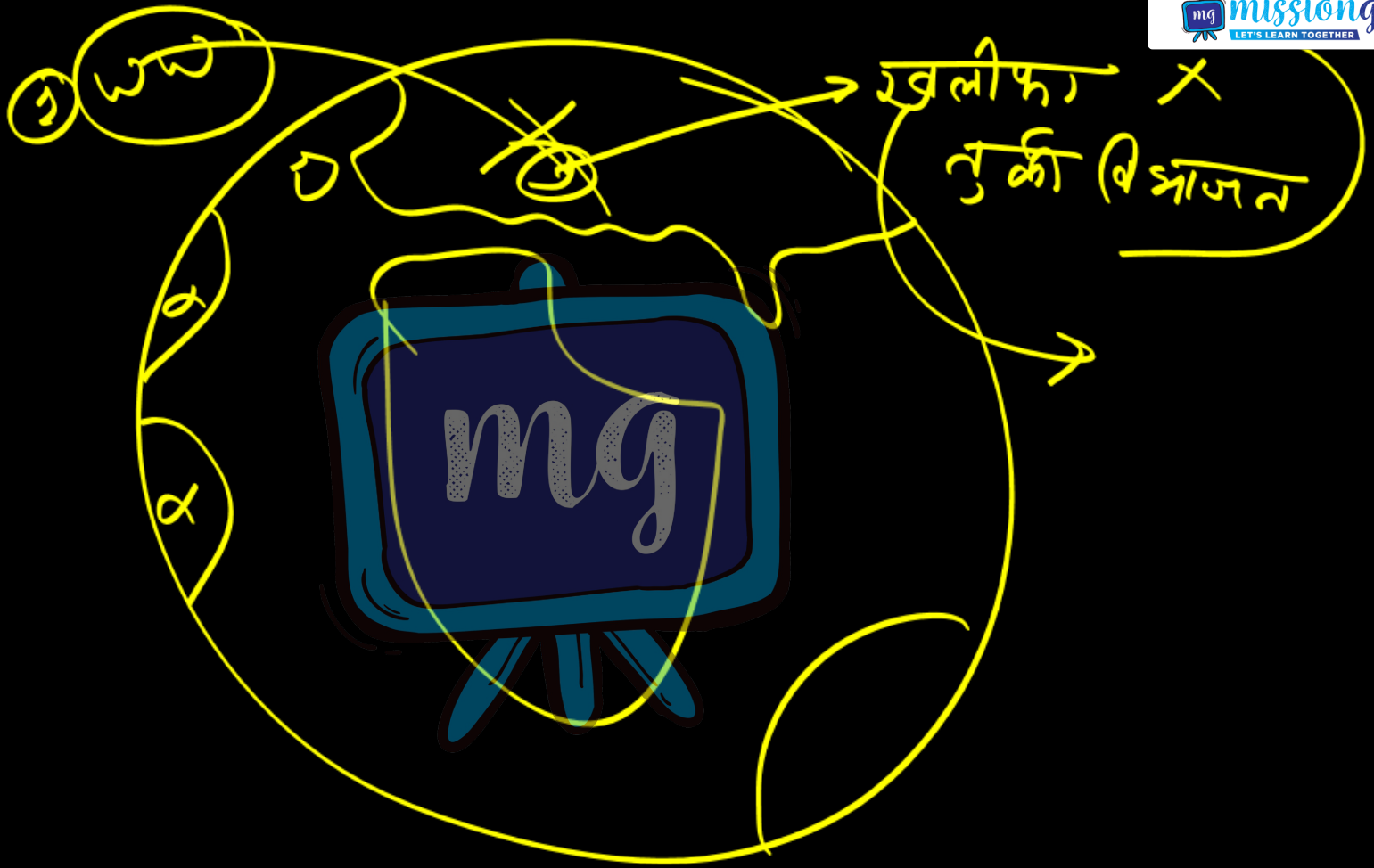
खलीफा
तुर्की

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

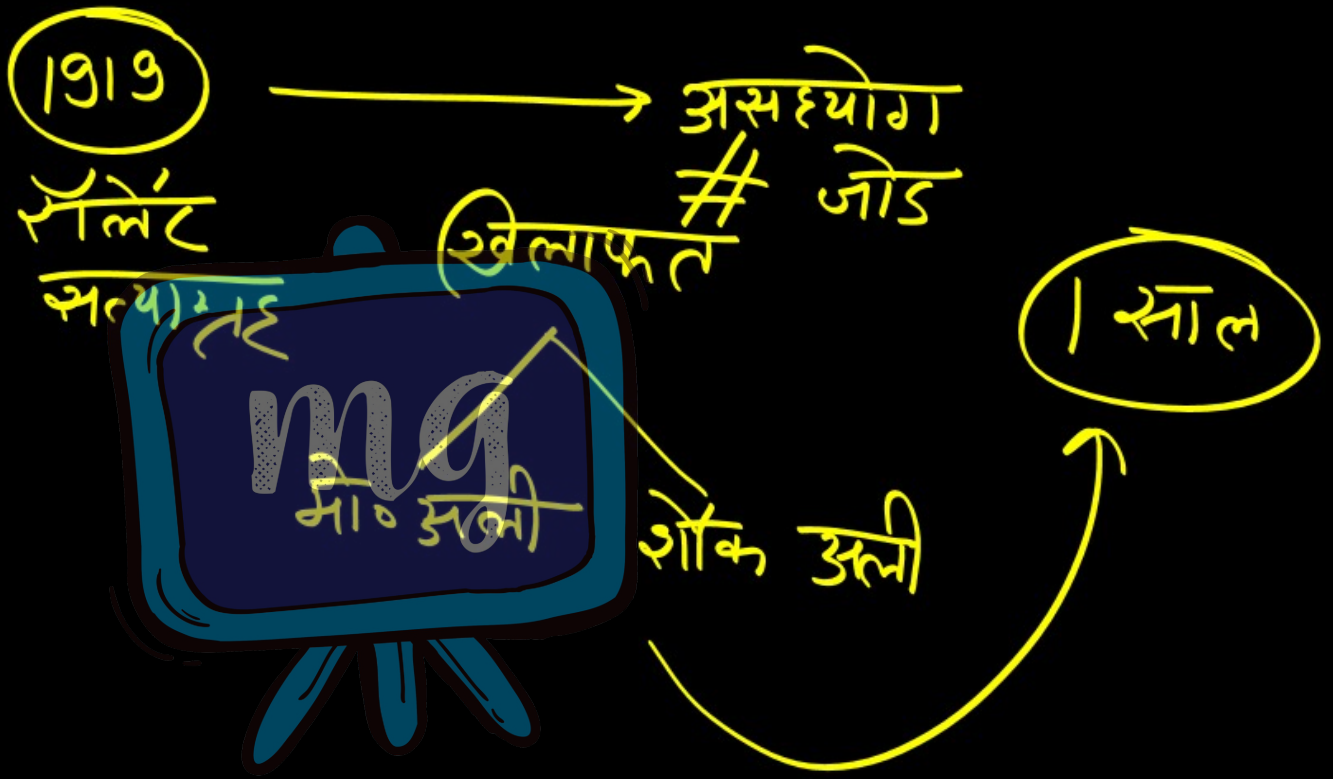

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

एक लोकप्रिय आंदोलन की तैयारी :-



- गाँधी जी ने यह आशा की थी कि असहयोग और खिलाफत को साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख धार्मिक समुदाय हिन्दू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।
- ये चीजें औपनिवेशिक भारत में बिल्कुल ही अभूतपूर्व थी।

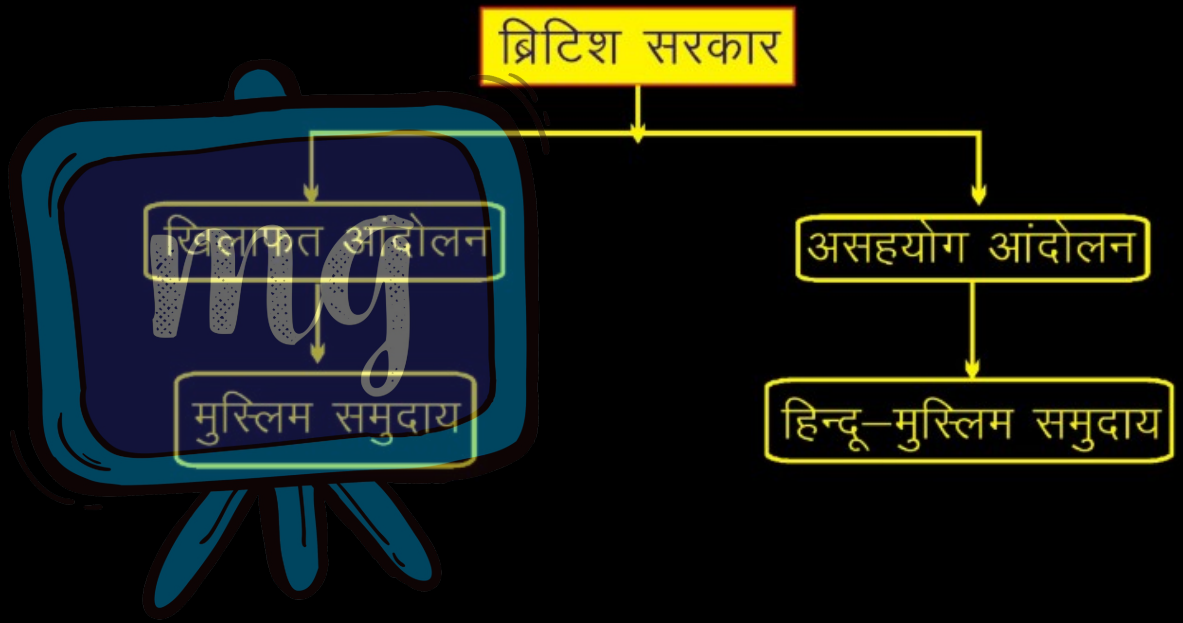
ब्रिटिश सरकार
खिलाफत आंदोलन
मुस्लिम समुदाय
असहयोग आंदोलन
हिन्दू–मुस्लिम समुदाय

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- विद्यार्थियों ने सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्कूलों और कॉलेजों में जाना छोड़ दिया।
- वकीलों ने अदालत में जाने से मना कर दिया।
- कई नगरों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चले गये।
- देहात भी असंतोष से आंदोलित हो रहा था।
- उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों ने वन्य कानूनों की अवहेलना कर दी।
- अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कुमाऊँ के किसानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान ढोने से मना कर दिया।
- 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप अंग्रेजी राज की नींव हिल गई।
- आंदोलन में कई स्थानों पर राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवज्ञा की गई।
- इसके लिए परित्याग और स्व-अनुशासन आवश्यक था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- फरवरी, 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रान्त के चौरी-चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी।
- इस अग्नि कांड में कई पुलिस वालों की जान चली गयी।
- हिंसा की इस कार्यवाही से गांधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा।
- आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- स्वयं गांधी जी को मार्च, 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया।
- जज बुमफील्ड ने गांधी जी को 6 वर्षों की जेल की सजा सुनाई।
- लेकिन जज ब्रूमफील्ड ने कहा कि – ''यदि भारत में घट रही घटनाओं की वजह से सरकार के लिए सजा के इन वर्षों में कमी और आपको मुक्त करना संभव हुआ तो इससे मुझसे ज्यादा कोई प्रसन्न नहीं होगा।''

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

एक लोकप्रिय आंदोलन की तैयारी :-

- गाँधी जी ने यह आशा की थी कि असहयोग और खिलाफत को साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख धार्मिक समुदाय हिन्दू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।
- ये चीजें औपनिवेशिक भारत में बिल्कुल ही अभूतपूर्व थी।

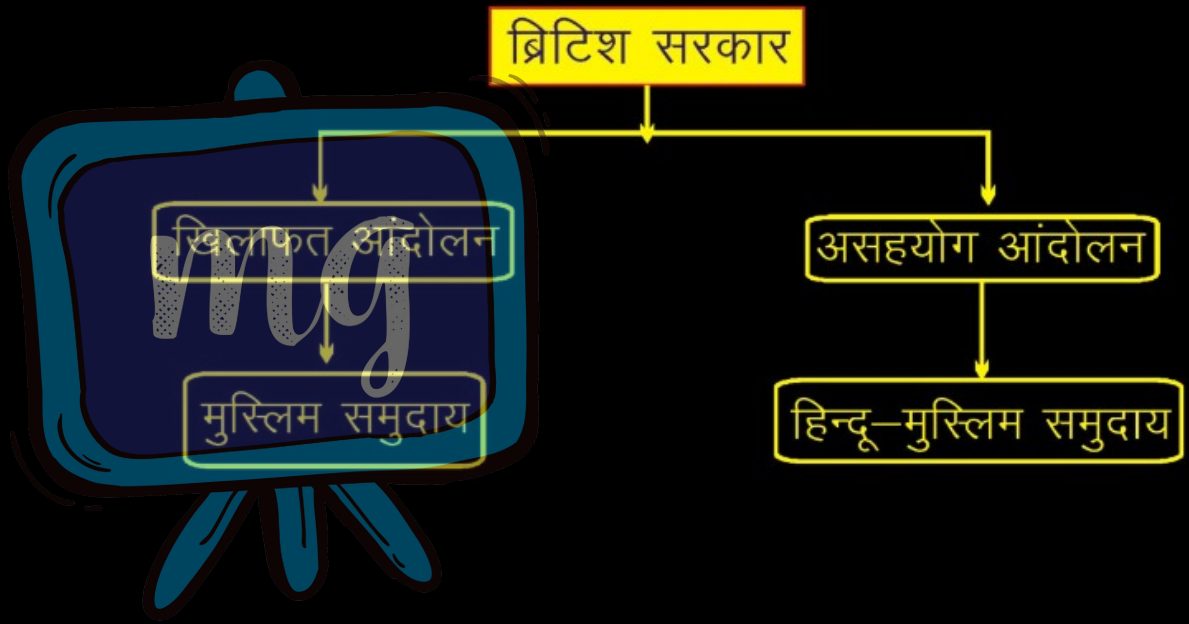
ब्रिटिश सरकार
खिलाफत आंदोलन
मुस्लिम समुदाय
असहयोग आंदोलन
हिन्दू–मुस्लिम समुदाय

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- विद्यार्थियों ने सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्कूलों और कॉलेजों में जाना छोड़ दिया।
- वकीलों ने अदालत में जाने से मना कर दिया।
- कई नगरों में श्रमिक-वर्ग हड़ताल पर चले गये।
- देहात भी असंतोष से आंदोलित हो रहा था।
- उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों ने वन्य कानूनों की अवहेलना कर दी।
- अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुमाऊँ के किसानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान ढोने से मना कर दिया।
- 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप अंग्रेजी राज की नींव हिल गई।
- आंदोलन में कई स्थानों पर राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवज्ञा की गई।
- इसके लिए परित्याग और स्व-अनुशासन आवश्यक था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- फरवरी, 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रान्त के चौरी–चौरा पुरवा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी।
- इस अग्नि कांड में कई पुलिस वालों की जान चली गयी।
- हिंसा की इस कार्यवाही से गांधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा।
- आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- स्वयं गांधी जी को मार्च, 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया।
- जज ब्रुमफील्ड ने गांधी जी को 6 वर्षों की जेल की सजा सुनाई।
- लेकिन जज ब्रूमफील्ड ने कहा कि – ''यदि भारत में घट रही घटनाओं की वजह से सरकार के लिए सजा के इन वर्षों में कमी और आपको मुक्त करना संभव हुआ तो इससे मुझसे ज्यादा कोई प्रसन्न नहीं होगा।''

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जन नेता :-

- 1922 तक गांधी जी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एकदम परिवर्तित कर दिया।
- अब यह व्यावसायिकों व बुद्धिजीवियों का ही आंदोलन नहीं रह गया था, अब हजारों की संख्या में किसानों, श्रमिकों और कारीगरों ने भी इसमें भाग लेना शुरू कर दिया।
- उन्होंने इस बात की प्रशंसा की कि गाँधी जी इनकी ही तरह के वस्त्र पहनते थे, उनकी ही तरह रहते थे और उनकी ही भाषा में बोलते थे तथा उनसे घनिष्ठ संबंध भी स्थापित कर लेते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- वे अन्य नेताओं की तरह सामान्य जनसमूह से अलग नहीं खड़े होते थे।
- गाँधी जी लोगों के बीच एक साधारण धोती में जाते थे।
- प्रत्येक दिन का कुछ हिस्सा वे चरखा चलाने में बिताते थे।
- सूत कताई के कार्य ने गाँधी जी को पारंपरिक जाति व्यवस्था में प्रचलित मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम की दीवार को तोड़ने में मदद दी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अफवाहें :-

- गाँधी जी जहां भी गए वहीं उनकी चमत्कारिक शक्तियों की अफवाहें फैल गयीं।
- गाँधी जी का विरोध करने वालों के लिए भयंकर परिणाम की बात बताती कहानियां थी।
- गाँधी जी की आलोचना करने वाले गाँव के लोगों के घर रहस्यात्मक रूप से गिर गए अथवा उनकी फसल चौपट ओ गयी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उनके भाषणों के दौरान कैसा माहौल होता था इस पर गोरखपुर के एक हिंदी समाचारपत्र ने यह रिपोर्ट लिखी है :

- भटनी में गाँधी जी ने स्थानीय जनता को संबोधित किया और इसके बाद ट्रेन गोरखपुर के लिए रवाना हो गयी।
- नूनखार, देवरिया, गौरी बाजार, चौरी-चौरा और कुसुमही (स्टेशनों) पर 15 से 20 हजार से कम लोग नहीं थे.....
- महात्मा जी कुसुमीही के दृश्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि जंगल के बीच स्थित होने के बावजूद उस स्टेशन पर 10,000 से कम लोग नहीं थे। प्रेम से अभिभूत होकर कुछ लोग रोते हुए देखे गए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- देवरिया में लोग गांधी जी को भेनी (दान) देना चाहते थे किंतु इसे उन्होंने गोरखपुर में देने को कहा। लेकिन चौरी-चौरा में एक मारवाड़ी सज्जन ने किसी तरह उन्हें कुछ दे दिया। इसके बाद यह क्रम रूका ही नहीं।
- एक चादर फैला दी गई जिस पर रूपयों और सिक्कों की बारिश होने लगी।
- यह दृश्य था ... गोरखपुर स्टेशन के बाहर महात्मा एक ऊँची गाड़ी पर खड़े हो गए और लोगों ने कुछ मिनटों के लिए उनके दर्शन कर लिए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- चरखे के साथ महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रवाद की सर्वाधिक स्थायी पहचान बन गए।
- 1921 में दक्षिण भारत को यात्रा के दौरान गाँधी जी ने अपना सिर मुँडवा लिया और गरीबों के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करने के लिए उन्होंने सूती वस्त्र पहनना आरंभ कर दिया।
- उनका यह नया रूप तपस्या और संयम का प्रतीक भी बना और ये ऐसी विशेषताएं थीं जिनका गांधी जी, आधुनिक विश्व की उपभोक्तवादी संस्कृति के प्रतिउत्तर में, गुणगान करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महात्मा गाँधी फरवरी 1924 में जेल से रिहा हो गए और अब उन्होंने अपना ध्यान घर में बुने कपड़े (खादी) को बढ़ावा देने तथा छूआ-छूत को समाप्त करने पर लगाया।
- गाँधी जी राजनीतिक जितने थे उतने ही वे समाज सुधारक थे। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता के योग्य बनने के लिए भारतीयों को बाल विवाह और छूआ-छूत जैसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त होना पड़ेगा।
- एक मत के भारतीयों को दूसरे मत के भारतीयों के लिए सच्चा संयम लाना होगा और इस प्रकार उन्होंने हिंदू-मुसलमानों के बीच सौहार्द्र पर बल दिया।

- असहयोग आंदोलन समाप्त होने के कई वर्ष बाद तक गाँधी जी ने अपने आपको समाज सुधार कार्यों पर केन्द्रित रखा।
- 1928 ई. में उन्होंने पुनः राजनीति में प्रवेश करने की सोची।

साईमन कमीशन – 1927

- साईमन कमीशन के विरूद्ध अखिल भारतीय अभियान चलाया जा रहा था।

बारदोली किसान आंदोलन – 1928

- गांधी जी ने इन दोनों आंदोलनों में भाग नहीं लिया।

1929 कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन –

- यह अधिवेशन दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था –
  1. जवाहर लाल नेहरू का अध्यक्ष के रूप में चुनाव जो युवा पीढ़ी को नेतृत्व सौंपने का प्रतीक था।
  2. 'पूर्ण स्वराज' अथवा पूर्ण स्वतंत्रता की उद्घोषणा।
- अब राजनीति की गति एक बार फिर बढ़ गई थी।
- 26 जनवरी 1930 को पहला पूर्ण स्वराज दिवस मनाया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दाण्डी यात्रा

- गाँधी जी ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश सरकार के सर्वाधिक घृणित कानूनों में से एक, जिसने नमक के उत्पादन और विक्रय पर राज्य को एकाधिकार दे दिया है, को तोड़ने के लिए एक यात्रा का नेतृत्व करेंगे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नमक यात्रा

- साबरमती आश्रम → दाण्डी
- प्रारम्भ 12 मार्च, 1930 → 5 अप्रैल, 1930



- 6 अप्रैल 1930 को नमक कानून तोड़ा और सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ हो गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- पूरे देश में अलग-अलग कानूनों का उल्लंघन किया गया।
- किसानों ने दमनकारी औपनिवेशिक वन कानूनों का उल्लंघन किया।
- कुछ कस्बों में फैक्ट्री कामगार हड़ताल पर चले गये।
- वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार कर दिया।
- विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षा संस्थानों में पढ़ने से इन्कार कर दिया।
- सरकार ने लगभग 60,000 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार होने वालों में गाँधी जी भी थे।

यात्रा के दौरान भाषण :-

- गाँधी जी ने स्थानीय अधिकारियों से आह्वान किया था कि वे सरकारी नौकरी छोड़कर स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल हो जायें।
- वसना गांव में ऊँची जाति वालों को संबोधित करते हुए कहा था कि ''यदि आप स्वराज के हक में आवाज उठाते हैं तो आपको अछूतों की सेवा करनी पड़ेगी। सिर्फ नमक कर या अन्य करों के खत्म हो जाने से आपको स्वराज नहीं मिल जायेगा.....।''

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- स्वराज के लिए हिंदू, मुसलमान, पारसी और सिख, सबको एकजुट होना पड़ेगा। ये स्वराज की सीढ़ियां हैं।
- अपनी रिपोर्ट में जिला पुलिस सुपरिटेडेंट ने लिखा था कि "श्री गांधी शांत और निश्चिंत दिखाई दिए। वे जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे हैं, उनकी ताकत बढ़ती जा रही है।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संवाद :-

नमक यात्रा कम से कम तीन कारणों से उल्लेखनीय थी –

1. यही वह पहली घटना थी जिसके चलते महात्मा गांधी दुनिया की नजर में आए।
2. यह पहली राष्ट्रवादी गतिविधि थी जिसमें औरतों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

समाजवादी कार्यकर्ता कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने गांधी जी को समझाया कि वे अपने आंदोलनों को पुरूषों तक ही सीमित न रखें ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. नमक यात्रा के कारण ही अंग्रेजों को यह अहसास हुआ था कि अब भारत में उनका राज बहुत दिन तक नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा।

गोलमेज सम्मेलन :-

- ब्रिटिश सरकार ने लंदन में ''गोलमेज सम्मेलनों'' का आयोजन किया।
- उद्देश्य – भारतीयों से संवाद स्थापित करना और भारतीयों को सत्ता में कुछ हिस्सेदारी देना।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन – नवम्बर, 1930

(लंदन)

- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। अंतत: यह बैठक निरर्थक साबित हुई।
- जनवरी, 1931 में गांधी जी को जेल से रिहा किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गांधी – इर्विन समझौता – 5 मार्च, 1931

शर्तें :–

1. सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेना।
2. सारे कैदियों की रिहाई और तटीय इलाकों में नमक उत्पादन की अनुमति देना।
3. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन – 1931



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस सम्मेलन में गाँधी जी ने कांग्रेस का नेतृत्व किया।
- मुस्लिम लीग ने मुस्लिम अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधित्व का दावा किया।
- राजे-रजवाड़ों ने अपने हितों को ध्यान में रखकर भाग लिया।
- तीसरी चुनौती तेज-तर्रार वकील और विचारक बी.आर.अम्बेडकर की तरफ से थी।

निचली जातियों का प्रतिनिधित्व किया।

- बी.आर. अम्बेडकर ने ''निम्न जातियों'' (दलितों) के लिए पृथक निर्वाचक मण्डल की मांग रखी।
- गाँधी जी ने इस मांग का विरोध किया।

क्यों – उनका मानना था कि ऐसा करने पर समाज की मुख्यधारा में उनका एकीकरण नहीं हो पाएगा और वे सवर्ण हिन्दुओं से हमेशा के लिए अलग रह जाएंगे।